chapter III (3)

- तृतीय प्रकरण -

भारत का प्राचीन कथा साहित्य

यद्यपि भारत की प्राचीन साहित्य परंपरा में 'उपन्यास' जैसी वस्तु नहीं मिलती, तो भी कथा साहित्य की भव्य परंपरा उसमें सुरक्षित है. भारत में आधुनिक उपन्यास का आविर्भाव पाश्चात्य सभ्यता अेवं साहित्य से हमारे संपर्क का परिणाम है. अिस संबंधमें श्रीवास्तवजी का अभिमत यह है, "अिस देश के पुरातन साहित्य भांडार में उपन्यास जैसी वस्तु ढूंढने से भी नहीं मिलेगी. अिस का कारण यह है कि उपन्यास स्वभावत: यथार्थ जीवन से संबंधित है और सामाजिक वैयक्तिक चेतना-विकास में अिसे अनुकूल भूमि मिलती है. अतअेव प्राचीन तथा मध्ययुग के कल्पना रंजित, आदर्शात्मक अेवं धर्मप्राण वायुमंडल में यह वांछित जीवन-रस ग्रहण नहीं कर सकता था."[१] हमारे प्राचीन साहित्य में अद्भूत रस-वैभव, अलंकार विधान का भव्य कौशल, अुच्च अेवं महान मानव चरित्र, आदर्शोंकी मोहकता ही अधिक है जो आज के वास्तविकता अेवं सरलता प्रधान उपन्यासों से कोसों दूर है. परंतु उपन्यास कथा-साहित्य का अेक प्रकार मात्र है. अत: अिसपर लिखने का लक्ष्य रखनेवाला अिसी देश की प्राचीन कथा-परंपरा की अुपेक्षा नहीं कर सकता. "सहस्त्रों वर्षों के विकास क्रम में संस्कृत पालि, प्राकृत और अपभ्रंश आदि भाषाओं के माध्यम से व्यक्त होती हुअी कथा-कलाने अपनी स्वतंत्र विशेषताएँ बनाली हैं और अिस प्राचीन साहित्य के अंतराल में भी स्थान-स्थान पर अन्वेषक को आधुनिक उपन्यास-कहानी के क्षीण संकेत मिल सकते हैं. काव्य हो अथवा धर्मग्रंथ, आख्यायिका हो अथवा नाटक, व्यंग-विद्रूपगर्भ कविता हो अथवा कौतुक-कथा, जहाँ भी लेखक जाने अनजाने समाज का चित्र अंकित करता हो अथवा सामाजिक मनुष्य का अंतर्-बाह्य

---

१) शिवनारायण श्रीवास्तव - 'हिंदी उपन्यास' संवत् २०१६ संस्करण पृष्ठ १

संघर्ष प्रतिबिंबित करने का प्रयास करता है, वहीं पर उपन्यास का बीज देखा जा सकता है;"[1] यों प्राचीन कथा साहित्य में उपन्यास के कई लक्षण विच्छिन्न रूप में छिपे हुये हैं.

अस कथा साहित्य का अध्ययन और अेक दृष्टि से महत्व का है. अिसीने अुन प्रवृत्तियों का रक्षण किया जो १९ वीं सदी के उपन्यास लेखक को सुलभ हो सकीं. लेखकों की प्रेरणा के स्त्रोत पाठकों की रुचि को अिसीने सुरक्षित रखा. अिसके अतिरिक्त हिंदी और कन्नड के आरंभ के उपन्यासों के कथा-संविधान, विषय-विवेचन, वर्णन-वैखरी आदि में भारतीय, विशेषत: संस्कृत कथा साहित्य का प्रत्यक्ष या परोक्ष प्रभाव दृष्टिगोचर होता है.

हिंदी और कन्नड दोनों भाषाओं के आविर्भाव के पूर्व ही यह कथा-परंपरा चली आयी है और अिन भाषाओं के आविर्भाव के पश्चात् अिन दोनों भाषाओंपर अिस परंपरा का समान प्रभाव पडा है. यही परंपरा दोनों भाषाओं के कथा-साहित्य के विकास में सहायक हुअी है जो अगले प्रकरण में स्पष्ट हो जायेगा. अिसी दृष्टि से प्रस्तुत प्रबंध में अिस परंपरा की संक्षिप्त विवेचना तो आवश्यक ही है.

अ) संस्कृत में कथा साहित्य

(य) वैदिक साहित्य

वेद - ऋग्वेद संसार में ही प्राचीन तम साहित्य है, जिस का रचनाकाल ई.पू.१५०० वर्षों से भी पूर्व निर्विवाद स्वीकृत हो चुका है. अिस में आर्यों के, विभिन्न देवताओं के स्तुति परक श्लोक हैं. अिसके संवाद सूक्तों तथा सामान्य स्तुतिपरक श्लोकों में अनेक कथाओं के बीज निहित हैं. स्वभावत:

---

१) शिवनारायण श्रीवास्तव -'हिंदी उपन्यास' सं.२०१६ का संस्करण, पृष्ठ १-२

अिन कथाओं में विभिन्न देवताओं की महत्ता प्रतिपादित है. ये ही भारतीय कथा-साहित्य के अुद्गम-स्त्रोत मानी जाती हैं.

(र) ब्राम्हण, उपनिषाद

अिन्हीं कथाओं का आगे चलकर ब्राम्हण, उपनिषाद अेवं अन्य परवर्ती महाकाव्य-पुराण आदि में विकास हुआ है. ब्राम्हणग्रंथों में यज्ञानुष्ठान की महत्ता के प्रतिपादन की दृष्टिसे प्राचीन ऋषियों अेवं राजाओं की नीतिबोधक कथाअें दी गयी हैं. उपनिषादों में भी अनेक आख्यान अुपलब्ध हैं जो प्रश्नोत्तर प्रणाली से कथित हैं.

अिन कथाओं का प्रमुख लक्ष्य मनारंजन नहीं, किंतु विशिष्ट दार्शनिक, नैतिक तथा धार्मिक विचारों की स्थापना करना है. अिन कथाओं में पात्र भी अुच्च वर्ग के राजा अेवं ऋषि-मुनि आदि हैं. अिन में मानव की अुच्चतर अुपलब्धियों के चित्रण के साथ ही साथ मानवोचित दुर्बलताएँ भी अभिव्यक्त हुअी हैं. अपाला, शुन:शेप, नचीकेत, सुकन्या अुर्वशी-पुरुरवा आदि की कथाओं में यह बात स्पष्ट विदित होती है.

ल) महाकाव्य अेवं पुराण

रामायण महाभारत-

'रामायण' अेवं 'महाभारत' दोनों भारतीय साहित्य स्तंभ के देदीप्यमान प्रदीप हैं. वैदिक साहित्य की कथा परंपरा लौकिक साहित्य में विभिन्न रूपों में विकसित हुअी है. "विव्दानों का मत है कि आदि कवि वाल्मीकि तथा महर्षि वेदव्यासने भी राम-कृष्ण की कथा को किसी पूर्व आख्यान से ही प्राप्त किया होगा और अपनी अुर्वर कल्पना अेवं समृध्द अनुभव के बल पर रामायण तथा महाभारत को विशाल अेवं विस्तृत कलारूप

प्रदान किया होगा;"[१] ये ग्रंथ कथा साहित्य के अपूर्व नमूने हैं. और देश-काल को पारकर के सहस्त्रों वर्षों तक साहित्यिक आनंद,अपूर्वनीतिबोध, श्रेष्ठ सांस्कृतिक संस्कार प्रदान कर रहे हैं. प्रधान कथा को मेरुदंड बनाकर ये दोनों व्यापक जीवन-चित्रण प्रस्तुत करते हैं. दोनों ग्रंथों में प्रासंगिक कथाएँ बडी संख्या में हैं, परंतु महाभारत में प्रासंगिक कथाओं की बहुलता है. अिन में दुष्यंत-शकुंतला की कथा, मत्स्यावतार की कथा, राम की कथा, राजा शिवि की कथा आदि के मध्य विकसित महाभारत की कथा कथा-कथन का अेक भव्य स्वरूप है. रामायण-महाभारत दोनों में धर्म, दर्शन, राजनीति को प्रमुख स्थान मिला है. शिल्प की दृष्टि से उपनिषादों में व्यवहृत प्रश्नोत्तरप्रणाली का यहाँ पर भी अनुसरण किया गया है. अेक कथा से दूसरी कथा निकलती चलती है. रामायण-महाभारत की कथाएँ आज के विभिन्न साहित्य-स्वरूपों के लिअे भी आधार हैं.

पुराण-

विभिन्न पुराण-ग्रंथों की कथा साहित्य के भव्य स्वरूप को अुपस्थित करनेवाले हैं. अिन पुराणों में प्रमुख पुराण १८ हैं. श्रीबलदेव उपाध्याय जीका निम्न लिखित कथन अुनके महत्व को स्पष्ट करता है. ''धार्मिक दृष्टि से पुराण वेद विहित धर्म का सरल सुबोध भाषा में वर्णन करता है. जब वेदों की भाषा सर्व साधारण के समझने लायक नहीं रह गयी, तब अुन के तत्वों को जनता तक पहुंचाने के लिअे पुराण बनाये गये. पुराणों का सामाजिक महत्व भी कम नहीं है. अुस समय के भारतीय समाज का स्वरूप हमें पुराण के पृष्ठों में ही अुपलब्ध होता है."[२]

"वैदिक साहित्य में वस्तुत सौभरिकाण्व, राजा हरिश्चंद्र, नचीकेत,याज्ञवल्क्य

---

१) शिवनारायण श्रीवास्तव -'हिंदी उपन्यास' सं.२०१६ का संस्करण पृष्ठ ३

२) बलदेव उपाध्याय - 'संस्कृत साहित्य का अितिहास' पंचम संस्करण पृष्ठ ५७

और मैत्रेयी, पुरुरवा और उर्वशी आदि पात्र पुराणों में विविध स्वरूपों में चित्रित हैं. यों वैदिक साहित्य की कथा परंपरा यहाँ सहस्त्र मुखी होकर पुराणों में प्रवाहित है." [१] अिन पुराणों में श्रीमद्भागवत सर्वश्रेष्ठ है.

श्रीमद्भागवत-

विव्दानों का अनुमान है कि यह अन्य सब पुराणों के बाद का संपादन हो. अिस ग्रंथ में कृष्ण की कथा प्रधान है. विव्दानों के अभिमत में यह ग्रंथ पांडित्य की कसौटी है. अिसे सभी श्रुतियों का सार महाभारत का तात्पर्य निर्णायक और ब्रह्मसूत्रों का भाष्य माना जाता है. परवर्ती भारतीय भाषाओं में उपलब्ध कृष्ण काव्य का मूल यही ग्रंथ है. हिंदी और कन्नड के प्राचीन साहित्यों पर अिस का पर्याप्त प्रभाव है. पौराणिक अेवं धार्मिक कथा साहित्य की परंपरा पर विशेषा प्रभाव हैं. "अिसे भारतीय कथा साहित्य की परंपरा की अेक बहुत महत्वपूर्ण कडी कही जानी चाहिअे." [२]

ल) संस्कृत का अन्य कथा साहित्य

संस्कृत में तीन प्रकार की कथाएँ पायी जाती हैं -
१) नीतिकथा (२) मनोरंजक कथा (३) साहित्यिक या काव्यात्मक कथा.

१) नीतिकथाएँ-

(च) पंचतंत्र - पंचतंत्र और हितोपदेश अिस श्रेणी की कथाएँ हैं. पंचतंत्र की रचना पंडित विष्णु शर्मा से हुअी. अिस का रचना काल अनुमान में ४-५ वीं सदी है. कहा गया है कि दक्षिण के राजा अमर शक्ति के अत्यंत मूर्ख तीन राजपुत्रों को नीतिशास्त्र का ज्ञान कराने के लिअे विष्णु

---

१) शिवनारायण श्रीवास्तव - 'हिंदी उपन्यास' संवत् २०१६ वा संस्करण पृष्ठ ४

२) डा.प्रताप नारायण टंडन - 'हिंदी उपन्यास में कथा शिल्प का विकास' संस्करण व्दितीय, पृष्ठ १०६

KATAK UNIVERSITY

शर्माने अिसकी रचना की और अिन कथाओं के व्दारा छ: महीनों में अुन मूर्ख बालकों को नीतिशास्त्र में निष्णात बना दिया. अिसमें मित्रभेद, मित्रप्राप्ति, संधि-विग्रह, लब्धप्रणाश, अपरीक्षितकारक ये पांच तंत्र हैं. प्रधान कथा पिंगलक नामक शेर और संजीवक नामक बैल की है. मूल कथा के बीच नीति के दृष्टांत देनेवाली बाईस प्रासंगिक कथाएँ गुंथी हुअी हैं. यहाँ के सब पात्र पशु-पक्षी, जड-चेतन हैं. कथाओं में कथाएँ जुडती जाती हैं.

श्री.शिवनारायण श्रीवास्तवजीके अनुसार "पंचतंत्र की विभिन्न कथाओं के व्दारा मनुष्य-जीवन के लिअे अुपयोगी व्यावहारिक ज्ञान अेवं आचार-नीति का प्रदर्शन किया गया है. अिस में राजनीति,अर्थनीति, समाजनीति तथा नागरिक शास्त्र आदि से संबंधितबडे ही अनुभव-समृध्द अुपदेश संकलित किये गये हैं."[१]

संसार की विभिन्न भाषाओं में अिसका अनुवाद हो चुका है. आचार्य बलदेव अुपाध्याय लिखते हैं, "लैटिन,ग्रीक,जर्मन,फ्रेंच,स्पैनिश तथा अंग्रेजी आदि भाषाओं में अिस के अनुवाद धीरे धीरे मध्ययुग से १६ वीं शताब्दी तक होते रहे. ग्रीस के सुप्रसिध्द कथा संग्रह 'ईसाप की कहानियाँ तथा अरब की मनोरंजक कहानियाँ, अरेबियन नाइट्स' की आधारभूत ये ही कहानियाँ है."[२]

छ) हितोपदेश-

'हितोपदेश' की रचना नारायण पंडितने की, जिस का रचना काल १४ वीं सदी माना गया है. ग्रंथकर्ताने स्वीकार किया है कि अिस ग्रंथ का आधार 'पंचतंत्र' ही है. अिस की कअी कथाएँ पंचतंत्र से ली गयी हैं. अिस के चार प्रकरण हैं - मित्रलाभ,सुहृद्भेद, विग्रह,संधि.

---

१) शिवनारायण श्रीवास्तव -'हिंदी अुपन्यास' सं.२०१६ का संस्करण पृष्ठ ११

२) आचार्य बलदेव अुपाध्याय - 'संस्कृत साहित्य का अितिहास' पंचम संस्करण,पृष्ठ ४३२

सब में कुल अडतालीस कथाएँ हैं जिनका लक्ष्य नीतिबोध ही है. पंचतंत्र के समान अिस में भी कथाएँ अेक दूसरी सें जुडी हुअी हैं. कथा-संविधान और भाषा पंचतंत्र से भी अधिक सरल और सुबोध होने के कारण यह अधिक लोकप्रिय है.

अुपर्युक्त दोनों ग्रंथों का अनुवाद भारत की सब भाषाओं में विशेषत: हिंदी और कन्नड में पर्याप्त पहलेही हो चुका है. अिस विषाय की चर्चा अुचित प्रसंग में की जायेगी.

२) मनोरंजक कथाएँ

अिस कोटि की कथाओं में प्रमुख कथाएँ यों हैं (१) वृहत् कथा (२) वैताल पंचविशतिका (३) शुक-सप्तति (४) सिंहासन व्दात्रिंशिका. नीचे अिन कथाओं का संक्षेप में परिचय करा दिया जा रहा है.

१) बृहत्कथा -

गुणाढ्यने पैशाची भाषा (प्राकृत का एक भेद) में अिस ग्रंथ की रचना की. अिसका रचना काल कअी विव्दानों के मत में पहली सदी है. मूल तो प्राप्त नहीं है, पर अिस ग्रंथ के आधार पर रचित तीन परवर्ती ग्रंथ मिलते हैं जिन में सोमदेव कृत 'कथासरित् सागर' सर्व श्रेष्ठ है. अिस में २४००० श्लोक हैं. कथा का शिल्प यह है कि अेक कथा से अनेक कथाएँ निकलती हैं. मूल कथा शिवव्दारा पार्वती से कही हुअी बतायी गयी है. पर वास्तव में वररुचि, काणभूति से कहता है. अिस मूल कथा से अन्य कथाएँ सहजरीति से निकलती चलती हैं. अिस शैली पर पौराणिक कथा शैली का प्रभाव है. प्रत्येक पात्र स्वतंत्र है. कल्पित पात्रों के साथ वत्सराज, विक्रमादित्य जैसे अैतिहासिक पात्र भी हैं. अिस कथा में तत्कालीन भारत की सामाजिक स्थिति पर भी प्रकाश मिलता है. अिस कथा के भंडारने हिंदी तथा कन्नड के साहित्यों को पर्याप्त प्रभावित किया है.

२) वैताल पंचविंशतिका-

विव्दानों का अनुमान है कि अिस के लेखक 'शिवदास' है. अिस में महाराज विक्रमादित्य से संबंध रखनेवाली पचीस कहानियाँ हैं. कोअी सिध्द राजा विक्रमादित्य के पास रत्नगर्भित फूल लाकर देता है जिसकी सिध्दि में सहायता प्राप्त करने राजा अेक वृक्ष पर लटकते हुएँ अेक शव को लाने का प्रयत्न करता है. परंतु वह शव पहले से ही किसी वेताल के आधिपत्य में है जो राजा के चुप रहनेपर ही उस शव को देना चाहता है. वह अितनी विचित्र कथा सुनाता है कि राजाको मौनभंग करना ही पडता है. वैताल पच्चीस कहानियाँ सुनाता है जो बडी रोचक हैं. आचार्य बलदेव उपाध्याय जी का मंतव्य है, "केवल वेताल पंचविंशति ही रोचक लोक कथाओं का अेक सुंदर तथा सुव्यवस्थित संग्रह है."[१]

३) शुकसप्तति-

अिस में अेक शुकव्दारा कही गयी सत्तर कहानियाँ हैं. अपने स्वामी के विदेश चले जाने पर परपुरुषों के प्रति आकृष्ट होनेवाली अपनी स्वामिनी को तोता ये कहानियाँ सुनाता है और अुसे कुपथ जानेसे बचाता हैं. अिस में अधिक कहानियाँ कुपथगामिनी, पतियों को छलनेवाली नारियों की हैं. स्त्री शिक्षा ही अुन का लक्ष्य है.

४) सिंहासन व्दात्रिंशिका-

राजा भोज धरती में गढे हुअे विक्रमादित्य के सिंहासन को अुखडवाता है और ज्यों ही अुसपर बैठने को प्रस्तुत होता है, त्यों ही सिंहासन में जडी हुअी बत्तीस पुतलियाँ क्रमश: अेक अेक ही आगे बढती हैं और विक्रमादित्य की शूरता न्यायनिष्ठुरता और अुदारता आदि गुणों की कथा सुनाकर राजा को अयोग्य सिध्द करती हैं और सिंहासन पर

---

१) बलदेव उपाध्याय - 'संस्कृत साहित्य का अितिहास' पंचम संस्करण पृष्ठ ४३७

बैठनेसे रोकती है. बत्तीस पुतलियों व्दारा कही गयी बत्तीस कहानियाँ अिस में संग्रहीत है.

३) साहित्यिक या काव्यात्मक कथाएँ-

अिस कोटि की कथाओं में 'वासवदत्ता', 'हर्षचरित', 'बाण कादंबरी', 'दशकुमार चरित' ये चार प्रमुख कथाएँ है. अिन में प्रथम ग्रंथ के रचयिता सुबंधु है, व्दितीय और तृतीय ग्रंथों के रचयिता बाणभट्ट और अंतिम ग्रंथ के रचयिता दंडी है.

त) वासवदत्ता-

अिस ग्रंथ में केवल नायिका का नाम प्राचीन है, अन्य सारे कथाभाग की कल्पना लेखक की प्रतिमा की अुपज है. अिस में कथावस्तु से भी काव्यमय वर्णन ही प्रधान है.

थ) हर्षचरित -

अिस ग्रंथ में महाराज हर्ष की जीवन-कथा सरल शैली में लिखी गयी है. बाणभट्ट की अनुपम कृति है, 'कादंबरी' जिस में आदर्श प्रेम की झांकी चित्रित है. अिस कथा में पूर्व जीवन का संबंध कौशल के साथ वर्तमान जीवन से गूंथा गया है. चंद्रापीड और कादंबरी, पुंडरीक और महाश्वेता का पवित्र प्रणय जन्मांतरों में चित्रित हुआ है. अिस कृति का कथा-संविधान, घटनाओं का संयोजन भावोन्मत्त करनेवाले मार्मिक प्रसंगो अेवं वार्तालापों की अुदभावना, अपूर्व कल्पनावैभव प्रकृति चित्रण तथा आदर्श यथार्थ का समन्वय आज के पाठकों के भी अध्ययन की सामग्री है.

द) दशकुमार चरित-

'दशकुमार चरित' की कथा अधिक लौकिक है. अिस में दस

राजकुमारों के अपने अपने पर्यटन के काल में प्राप्त स्वानुभवों और साहसों की कथा चित्रित है. यह कथा मनोरंजक है. अनके अनुभव. छल-छद्म, मार-काट आदि से भरे हुओ सजीव होकर हमारे सामने प्रस्तुत होते हैं. अिस में तत्कालीन समाज का वास्तविक चित्र भी है. अिस कृति की विशेषताकी चर्चा करते हुअे आचार्य बलदेव उपाध्यायजी लिखते हैं, रोमांच तथा विस्मयावह घटनाओं से पूर्ण होने के कारण दशकुमार चरित का वातावरण नितांत आधुनिक है. छल-कपट, मार-काट तथा सांच-झूठ से ओतप्रोत होने के कारण यह अेक सजीव रचना है. दंडी की प्रतिभा घटनाओं की यथार्थता में चरितार्थ होती है. यथार्थ-वाद यहाँ प्रति पृष्ठ पर प्रतिबिंबित हो रहा है. ----- दंभी तपस्वी, कपटी ब्राम्हण तथा छली वेश्याओं का चित्रण अितनी रुचिरता तथा यथार्थता के साथ किया गया है कि अुन के व्यक्तित्व की गहरी छाप पाठकों के हृत्य पर पडती है."[१]

ब) प्राकृत,पाली तथा अपभ्रंश कथा साहित्य-

बृहत्कथा की चर्चा अुपर की गयी है जो मूलत: पैशाची(प्राकृत का प्रभेद) भाषा में लिखी गयी थी. यहाँ पाली तथा अपभ्रंश के कथा साहित्य का संक्षिप्त परिचय दिया जायेगा.

क्ष) जातक कथाएँ (पाली में)-

भारतीय कथा-परंपरा जातक कथाओं के व्दारा नया मोड लेती है. वर्तमान स्वरुप में अुन की प्राचीनता दो हजार वर्ष पूर्व की दिखायी पडती है. संख्या में ये कथाएँ ५५० हैं.[२] ये कथाएँ भगवान बुध्द से संबंध रखनेवाली हैं. 'जातक' का शब्दार्थ है जन्मसंबंधी. भगवान बुध्द को बुध्दत्व

---

१) आचार्य बलदेव उपाध्याय - 'संस्कृत साहित्य का अितिहास' पंचम संस्करण पृष्ठ ४१२

२) वे ही ग्रंथ वही पृष्ठ ४३४

प्राप्त करने के पूर्व अनेक जन्म धारण करने पडे. जातक में व्यवहृत 'बोधिसत्व' 'बुध्दत्व' के लिऐ प्रयत्नशील जीव हैं. अिस बोधिसत्व के पांच सौ पचास सैंतालीस जन्मों का अुल्लेख अिन कथाओं में है. अिन कथाओं में बुध्द स्वयं अपने पूर्व जन्मों का व्रत वर्णन करते हैं. हर जातक कथा के चार भाग हैं - १) पच्चुपन्न वत्थु (२) अतीत वत्थु (३) अत्थवण्णना (४) समोधान.

अिन कथाओं का संबंध संस्कृत कथाओंकी प्राचीन परंपरा से जोडते हुअे मान्य शिवनारायण श्रीवास्तवजी लिखते हैं, "रामायण-महाभारत के अनेक आख्यान किसी रुप में जातक कथाओं में भी मिलते हैं. अिस से यह तथ्य तो पुष्ट होता है कि कथा-कहानी की प्राचीन परंपरा बौध्द तथा अबौध्द साहित्यों में समान रुप से प्रवाहित होती रही. जातक में यह परंपरा लोक-रुचि के अधिक समीप आयी और अिस में महान् व्यक्तियों अेवं घटनाओं तक ही सीमित न रहकर सामान्य जनसमुदाय के जीवन की साधारण घटनाओं को वर्णित करने का भी प्रयास किया गया." [१]

आचार्य बलदेव उपाध्याय के मत में "अत्यंत प्राचीन काल से दंतकथा या लोककथा के रुप में जो कहानियाँ चली आती थीं, अुन का अिन जातकों में विशाल समुच्चय है." [२]

अिन जातक कथाओं की लोक प्रियता का प्रमाण है. अिन कथाओं का विश्व की विभिन्न भाषाओं में प्राचीन काल में ही अनुवाद हो जाना. अिस संबंध में मान्य भदंत आनंद कौसल्यायन लिखते हैं, "अरबी के क्लैला दमना की तरह यह ग्रंथ लोगों को बहुत प्रिय हुआ और अिस का प्रचार भी बहुत हुआ. अनेक योरोपिय भाषाओं में अिस का अनुवाद किया

---

१) शिवनारायण श्रीवास्तव -'हिंदी उपन्यास' सं. २०१६ का संस्क. पृष्ठ ७
२) बलदेव उपाध्याय - 'संस्कृत साहित्य का अितिहास' पंचम संस्करण, पृष्ठ ४३४

गया. यह ग्रंथ लातीनी, फ्रेंच, इटालियन, स्पैनिश, जर्मन, अंग्रेजी, स्वेडिश और डच में प्राप्त हैं.------- कितनी आश्चर्य की बात प्रतीत होने पर भी यह सत्य है कि संत जोसफत के रूप में भगवान बुध्द आज सारे रोमन केथोलिक ईसाइयों व्दारा स्वीकृत है, आदृत है और पूजे जा रहे हैं. ------ अेक इटालियन विव्दानने सिध्द किया है कि किताब उल् सिंदबाद की अनेक कथाओं का और अलिफ लैला (अरेबियन नैटस्) की अनेक कथाओं का भी मूलस्थान जातक कथाएँ ही हैं."[1] ये कथाएँ बहुत रोचक तथा मर्मस्पर्शी हैं. अत: परवर्ती कथा साहित्य पर अिन का गहरा प्रभाव पडा हैं.

ज्ञ) अपभ्रंश में कथा साहित्य-

अपभ्रंश में प्राप्त सारा साहित्य विशेषत: जैन साहित्य है. अिस में अधिकांश काव्य है, पर कथा-कथन की परंपरा पर पर्याप्त प्रकाश पडता है. अपभ्रंश की सब रचनाएँ आठवीं शताब्दीसे पंद्रहवीं शताब्दी के बीच में मिलती हैं. अिस साहित्य में प्रबंध तथा मुक्तक दोनों प्रकार के काव्य हैं. प्रबंध काव्य में चरित, कथा और पुराण, ये तीन रूप हैं. चरित में अैतिहासिक वृत्त है. कथाएँ अधिक कल्पना प्रसूत हैं. तथा पुराण महापुरुषों के जीवनपर लिखे हुअे हैं. चरित में प्रमुखत: स्वयंभू का 'पउम चरिउ'(पद्मश्री चरित) पुष्पदंत का जंसहर चरिउ', कनकामर का 'करकंडु चरिउ', परिभद्र का 'नेमिनाह चरिउ' और हेमचंद्र का 'कुमार पाल चरिउ' आदि हैं. कथाओं में धनपाल की 'भविस दत्त कहा' है और पुराणों मे प्रमुख है पुष्पदंत का 'महापुराण'. अिन ग्रंथो की रचनाओं में जैन दृष्टिकोण अेवं दर्शन का संपूर्ण पालन किया गया है. तदनुकूल परंपरागत कथाओं में पर्याप्त परिवर्तन भी दृष्टिगोचर होता है. अुदाहरण के लिअे स्वयंभूकृत 'पउम चरिउ' (पद्मश्री चरित) यानी रामायण में राम कथा को जैन संप्रदाय के अनुकूल

---

१) भदंत आनंद कौसल्यायन -'जातक' प्रथम खंड पृष्ठ २०७-८-९ यहाँ 'हिंदी उपन्यास में कथा शिल्प का विकास' प्र.नारायण टंडन से अुध्दृत , दूसरा संस्करण पृष्ठ १०९.

पर्याप्त परिवर्तित किया गया है. चरित काव्य में किसी राजा या धनिक की विदेश-यात्रा, विवाह, युध्द अेवं वैराग्य आदि का वर्णन होता है. अिन में धार्मिक अंश को अलग कर दें तो ये प्रेमाख्यानक काव्य हैं जिसका प्रभाव परवर्ती हिंदी के प्रेमाख्यानक काव्यों पर पडा है. अिन सब कथा-चरित्रों का प्रभाव परवर्ती हिंदी तथा कन्नड साहित्योंपर तथा कथा परंपरा पर पाया जाता है.

अुपर्युक्त विवेचन के आधार पर हम अिस निष्कर्ष पर आ सकते हैं कि आज से साढेतीन हजार वर्षों से अधिक पूर्व कालसे भारत में कथा परंपरा चलती आयी है. वैदिक साहित्य में हम अिस परंपरा का अुत्स देखते हैं. वही परंपरा परवर्ती संस्कृत, प्राकृत, पाली तथा अपभ्रंश साहित्यों में आवश्यकता के अनुसार परिवर्तित अेवं परिवध्दित होकर प्रवाहित होती रही है. आचार्य बलदेव उपाध्याय जी का यह कथन हमारे अिस निष्कर्ष की ही पुष्टि करता है, "वेद में आयी हुअी कहानियाँ पुराणों में आकर कुछ रुपांतरित हो गयी हैं. रामायण तथा महाभारत में अिन के कअी अंशों में परिवर्तन दीख पडता है. परंतु कथानक का मूल अेक ही है. बौध्द साहित्य तथा जैन साहित्य में भी अिन कहानियों के प्रतिनिधि विद्यमान हैं." [१] अगले प्रकरण में हम देखेंगे कि अिसी कथा परंपरा का, हिंदी और कन्नड भाषाओं में भी पर्याप्त विकास हुआ और अिसी परंपराने अुन साहित्यों की श्रीवृध्दि की.

---

१) बलदेव उपाध्याय - 'संस्कृत साहित्य का अितिहास' पंचम संस्करण पृष्ठ ४३५